अध्याय –द्वितीय
सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

संबंधित साहित्य का अध्ययन

2.1 प्रस्तावना :–

सतत् मानव प्रयासों से, भूतकाल में एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसंधान में मिलता है। अनुसंधान के द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संबंधित समस्याओं पर पहले किये कार्य को बिना जोडे स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नही हो सकता।

अनुसंधान प्रारंभ करने की प्रथम सीढी साहित्य का पुनरावलोकन है। संबंधित साहित्य का अध्ययन अनुसंधानकर्ता के लिए महत्वपूर्ण है, इसके अभाव में वस्तुनिष्ठ रूप से अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ा सकना जब तक उसे ज्ञात न हो की उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका, है, किस विधि से कार्य किया गया है, तथा उसके निष्कर्ष क्या आये है तब तक समस्या का निर्धारण और परिसीमन करने में तथा शोध कार्य की रूपरखा तैयार करने में कठिनाई आती है। शोध से संबंधित पूर्व जानकारी हमें अपने कार्य को नया रूप व नये आयाम देने में मददगार साबित होती है।

2.2 साहित्य पुनरावलोकन के साधन :–

साहित्य का पुनः अध्ययन शोध के क्षेत्र से जुड़ने व परिणाम की ओर अग्रसर होने मे मद्द करता है। साहित्य पुनरावलोकन के अभाव में शोध की पुनरावृत्ति हो सकती है। अपने कार्य को सुचारू रूप से चलनें हेतु व उद्देश्य से विचलित न होने के लिए संबंधित साहित्य का अध्ययन आवश्यक है। इसके लिए कुछ साधन इस प्रकार है:–

- जर्नलस
- पुस्तके

- दस्तावेज (विभिन्न शैक्षिक दस्तावेज)
- इनसायक्लोपिडिया
- शैक्षिक सर्वे रिपोर्ट
- शोध सारांश इत्यादि

2.3 सम्बन्धित साहित्य का महत्व :

डब्ल्यू. आर. बोर्ग के मतानुसार किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता है। यदि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षणद्वारा इस नींव को दढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य के प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की संभावना है यह पुनरावृत्त भी हो सकता है।

2.4 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से लाभ :-

1. सम्बन्धित साहित्य अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता है।
2. इससे अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने में सहायता मिलती है।
3. शोध प्रबन्ध के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में अनुसंधान के ज्ञान, उसकी स्पष्टता तथा कुशलता को स्पष्ट करता है।
4. अब तक उस क्षेत्र में हो चुके कार्य की सूचना देता है।
5. पहले किये गये कार्य के ऑकड़े वर्तमान अध्ययन में सहायक होते है।

2.5 सम्बन्धित साहित्य

पौक्षे :-1983 To enlist and Analyse the Concpts in Geography copvering the syleelri for standards VII, VIII and XI of secondary school in maharashtra state and to develop the Methodology of teaching (1983, M.Phil Pune University.)

अध्ययन उद्देश्यः–

i. महाराष्ट्र राज्य के कक्षा 7,8 तथा 9 के भूगोल पाठ्यक्रम में भूगोल के संप्रत्ययों की पहचान करना।

ii. भूगोल के पाठ्यक्रम में भूगोल के उपलब्ध संप्रत्ययों का विश्लेषण करना।

iii. संकल्पना संबंधी विधि का विकास करना।

प्रतिदर्शः–

अध्ययन के लिए धुले जिले के 162 मराठी स्कूलों में से 20स्कूलों का चयन यादृच्छिक स्तरीकरण प्रतिचयन विधि के द्वारा किया गया था। इन स्कूलों में से दस स्कूलों से 611 विद्यार्थियों का एक समूह बनाया और 661 विद्यार्थियों का दूसरे 10 स्कूलों में से चयन कर दूसरा समूह बनाया।

निष्कर्षः–

दोनों समूह में अंतर निकालने के लिए ''टी'' टेस्ट का उपयोग किया गया। इन्होंने पाया कि भूगोल का पाठ्यक्रम संकल्पना भिमुख नहीं है।

पाटिल – 1985

सोलापुर जिले के ग्रामीध स्कूल में भूगोल शिक्षण में आने वाली समस्याओं का अध्ययन (1985 Ph.D. अमरावती विश्वविद्यालय)

अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण माध्यमिक स्कूलों में भूगोल शिक्षण की उपलब्धि वर्तमान सुविधाओं का अध्ययन करना।
2. भूगोल शिक्षण में अपनाई जाने वाली विधियों एवं तकनीकियों का अध्ययन करना।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष

1. ग्रामीण स्कूलों में भूगोल कक्ष की सुविधा नहीं है।

2. अधिकतर शिक्षक व्याख्यान विधि से या परम्परागत विधि से पढाते है।
3. विद्यालयों में भूगोल संग्रहालय तथा पर्याप्त पुस्तकालय तथा शिक्षण सहायक सामग्री उपलब्ध नहीं है।
4. समय की कमी के कारण भौगोलिक उद्देश्यों की पूर्ति नहीं हो पाती है ऐसा शिक्षक मानते है।

दुबे (2002–03) के द्वारा हाई–स्कूल स्तर पर भूगोल में मानचित्र अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों द्वारा की जाने वाली त्रुटियों का तुलनात्मक अध्ययन एवं उनके निदानात्मक उपाय।

शैक्षिक शोध सारांश (1994–2003) शोध प्रभाग शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

उद्देश्य

i- छात्रों में भूगोल अध्ययन के प्रति रूचि का अध्ययन करना।
ii- भूगोल विषय में मानचित्र अध्ययन में छात्रों को होने वाली कठिनाईयों के विषय में जानकारी प्राप्त करना।
iii- प्रश्न–पत्रों में मानचित्र संबंधी समस्याओं, प्रश्नों के उचित मानदण्डों का निर्धारण करना तथा वर्तमान प्रश्न–पत्रों में इस कौशल के मूल्यांकन का स्थिति ज्ञान करना।
iv- मानचित्र उपयोग की सही जानकारी छात्र–छात्राओं को प्रदान करना।
v- मानचित्र अध्ययन में होने वाली त्रुटियों के कारणों की सही जानकारी मालूम करना।
vi- त्रुटियों को दूर करने हेतु उपाय ढूँढना।

निष्कर्ष

1. शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं में भूगोल के मानचित्र अध्ययन पर आधारित पूर्व–परीक्षण एवं पश्च–परीक्षणों में किसी प्रकार का सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. पूर्व परीक्षण एवं पश्चात्–परीक्षणों ग्रामीण एवं शहरी की तुलना ही परीक्षण से करने पर दोनों में कोई सार्थक अंतर नहीं देखा गया।

तोमर (2002–2003) – ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में कक्षा आठवीं के सामाजिक अध्ययन की भूगोल विषयांश अवधारणा एवं कठिन शिक्षण बिन्दुओं का तुलनात्मक अध्ययन किया।

शोध प्रबंध (2002–03) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान भोपाल।

उद्देश्य

1. कक्ष आठवीं के भूगोल विषयांश के संबंध में ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों की अवधारणाओं एवं जटिल शिक्षण बिंदुओं का अध्ययन करना।
2 कक्षा आठवी के शहरी बालक एवं बालिकाओं की भूगोल विषयांश अवधारणाओं एवं जटिल शिक्षण बिंदुओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. कक्षा आठवीं के शहरी बालकों एवं ग्रामीण बालकों की भूगोल विषयांश अवधारणाओं एवं जटिल शिक्षण बिंदुओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. कक्षा आठवीं की शहरी बालिकाओं एवं ग्रामीण बालिकाओं की भूगोल विषयांश अवधारणाओं एवं जटिल शिक्षण बिंदुओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. कक्षा आठवीं के ग्रामीण बालक एवं ग्रामीण बालिकाओं की भूगोल विषयांश अवधारणाओं एवं जटिल शिखण बिंदुओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष

1. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं नगरीय विद्यार्थियों में सार्थक अंतर पाया गया।
2. कक्षा आठवीं के ग्रामीण क्षेत्र के बालक–बालिकाओं में भूगोल विषय की अवधारणाओं एवं जटिल शिक्षण बिंदुओं की तुलना करके पर दोनों में सार्थक अंतर पाया गया।
3. शहरी क्षेत्र में भी बालक–बालिकाओं की तुलना करने पर दोनो में सार्थक अंतर पाया गया और यह अंतर छात्राओं के पक्ष मे था।
4. शहरी और ग्रामीण छात्रों की तुलना करने पर दोनो में सार्थक अंतर पाया गया। यह भी शहरी छात्रों के पक्ष में था।
5. शहरी और ग्रामीण बालिकाओं की तुलना करने पर दोनों में सार्थक अंतर पाया गया।

सोनवणें (2004–05) कक्षा पांचवी के छात्रों की मानचित्र पठन में आने वाली प्रमुख समस्याएँ एवं उपाय योजना। यह अध्ययन प्रायोगिक विधी द्वारा संचालीत किया गया।

शोध प्रबंध (2006–07) पूणे विश्वविद्यालय पुणे

उद्देश्य

1. छात्रों को दिशा दिखाने में आने वाली समस्या का अध्ययन।
2. मानचित्र के मूलभूत घटकों को समझने में आनेवाली समस्याओं का अध्ययन करना।
3. मानचित्र का शीर्षक एवं घटक राज्य को समझने में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।

4. मानचित्र भरण में आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना।
5. मानचित्र पठन में आने वाली समस्याओं पर उपाय योजना तथा सुझाव देना।

अध्यापन विधि :- प्रायोगिक विधि

निष्कर्ष

1. शिक्षकों ने शैक्षिक साहित्य को इस्तेमाल, करके दिशा के बारे में अध्यापन किया तो वह छात्रों को ज्यादा समय तक ध्यान में रहता है और वह बराबरदिशा दिखाते है।
2. शिक्षकों ने प्रत्यक्ष मानचित्र का कक्षा में इस्तेमाल करके विविध शैक्षिक सामग्री से सिखाने पर वह मानचित्र पठन करने है।
3. कक्षा में छात्रों को मानचित्र के सहयोग से अध्यापन किया तो और छात्रों को कृति करके शामिल किया तो छात्र मानचित्र पठन बराबर करते है।

भोजने (2004-2005) - के द्वारा कक्षा दसवीं के छात्रों को मानचित्र भरण में आने वाली समस्याऐं एवं उपाय योजना।

लघुशोध प्रबंध (2004-05) पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

उद्देश्य

1. मानचित्र भरण में होने वाली गलतियों को ज्ञान करना।
2. मानचित्र भरण में होने वाली गलतियों का विश्लेषण करना।
3. मानचित्र भरण में होने वाली गलतियों के सुधार हेतू उपाय योजना देना।

अध्ययन पद्धति :- प्रायोगिक पद्धति / विधि

निष्कर्ष

अ. पूर्व परीक्षण से प्राप्त निष्कर्ष

1. छात्रों को रूढ चिन्ह एवं अवधारणाओं के बारे में जानकारी नहीं है।
2. छात्रों को अक्षांश व देशांतर के बारे में जानकारी नहीं है।
3. छात्रों को भारत सीमा, तथा घटक राज्यों के सीमा के बारे में जानकारी नहीं है।

ब. पश्च परीक्षण से प्राप्त निष्कर्ष

1. रूढ चिन्ह एवं रवूणा चार्ट दिखाकर अध्ययन किया तो छात्रों के समझ में आये।
2. छात्रों को दिशा समझने में कुछ महत्वपूर्ण बातें बताने से वह दिशा समझ सके।
3. मानचित्र भरण के बारे में कुछ महत्वपूर्ण सुझाव देने से यह मानचित्र सही भरण करते है।
4. सीमा विस्तार समझाने पर वह सही मानचित्र में दिखाते है।

शर्मा (2005–2007) – के द्वारा भूगोल विषय में कक्षा नवीं के छात्रों को मानचित्र पढन में आने वाली समस्याओं का अध्ययन एवं उपाय योजना।

शोध प्रबंध (2005–07) पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

उद्देश्य

1. कक्षा नवी के छात्रों को मानचित्र पढन में आने वाली कठिनाईयों को ज्ञान करना।
2. मानचित्र पठन में हाने वाली गलतियों को ज्ञात करना।
3. मानचित्र में होने वाली गलतियों के सुधार हेतु सुझाव देना।

निष्कर्ष

1. अध्यापन शैक्षिक सामग्री के इस्तेमाल करके किया तो छात्रों के ज्यादा समय ध्यान में रहता है।
2. कक्षा में मानचित्र का इस्तेमाल करके अध्यापन यि का तो छात्र अच्छे तरीके से मानचित्र पढ़ सकते है।

3. कक्षा में छात्रों का कृतियुक्त सहभागी किया तो छात्रों की गलतियाँ कम होती है।

4. कक्षा में पारम्परिक विधि से अध्यापन सामग्री का इस्तेमाल करके अध्यापन किया तो विद्यार्थियों की रुचि बढ़ सकती है।

2.6 निष्कर्ष :-

उपरोक्त संबंधित साहित्य का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि जितने भी शोध कार्य किये है वह भूगोल अधिगम से संबंधित है तथा भूगोल के अंतर्गत मानचित्र में कठिनाई से संबंधित शोध कार्य अल्प मात्रा में हुये है। अतः शोधार्थी के विचार से मानचित्र में भी कई मुख्य पहलु जैसे राननीतिक मानचित्र, भौगोलिक विस्तार, रूढ चिन्ह तथा मानचित्र भाग आदि में कठिनाई उत्पन्न होती है अतः शोध की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, शोधार्थी ने उद्देश्य, परिकल्पना व विभिन्न चरों तथा सीमांकन को अपने अध्ययन में शामिल किया है। अगले प्रस्तुत अध्याय में इन्हीं शोध साहित्यों के आधार पर अपनी शोध प्रविधि तैयार की हैं। जिसका विवरण तृतीय अध्याय में है।